एकादश दिवसीय उमास्वाति (उमास्वामि) कृत तत्त्वार्थसूत्र राष्ट्रीय कार्यशाला

संयुक्त तत्त्वावधान

बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी तथा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली

(दिनांक 05.2.2017 से 15.02.2017)

प्रतिवेदन

भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नइ दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में एकादश दिवसीय उमास्वाति या उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला (05 फरवरी, 2017 से 15 फरवरी, 2017) आयोजित हुई। इस कार्यशाला में प्रबुद्ध प्रतिभागियों को उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र क दस अध्यायों का सूत्रानुसारी अध्ययन कराया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जैन धर्म के तत्त्वार्थसूत्र का युवा-अध्येताओं में ज्ञान तथा प्रसार की ओर अभिरुचि जागृत करना था। इसी उद्देश्य हेतु अध्यापन कराया गया।

ग्रन्थ के मुख्य प्रतिपाद्य के अध्ययन के साथ ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार से सम्बन्धित आवश्यक परिचय भी कराया गया, जिसमें तत्त्वार्थसूत्र का महत्त्व, उमास्वाति-जीवन परिचय, गुरु, काल, कृतित्व, श्वेताम्बर-दिगम्बर संस्करण की मुख्य विशेषताओं आदि का परिचय कराया गया। इस कार्यशाला में जैन दर्शन, आचार, लोक एवं तद्विषयक समस्याओं का भलीभांति अध्ययन कराया गया।

ग्रन्थ के अध्ययन के साथ विषय से सम्बन्धित कई विशेष व्याख्यान आयोजित किये गये। इन विशेष व्याख्यानों के माध्यम से जैन आगम साहित्य एवं तत्त्वार्थसूत्र की विषयवस्तु, त्रिविध एवं चतुर्विध मोक्षमार्ग, सात एवं नौ तत्त्व परम्परा, जगत्वैचित्र्य के कारण और जैन कर्म सिद्धान्त पर प्रकाश डाला गया। साथ ही जैन दार्शनिक साहित्य, जैन कर्म सिद्धान्त सम्बन्धी साहित्य, जैन श्रमणाचार एवं श्रावकाचार विषयक साहित्य तथा जैन ध्यान एवं योग विषयक साहित्य का भी ज्ञान कराया गया। इस प्रकार यह कार्यशाला जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन के क्षेत्र में कार्य करने वाले अध्येताओं के साथ-साथ जैन विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक लोगों के लिए भी उपयोगी रही।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला में 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनका चयन पचासो आवेदकों में से किया गया। इनमें एसोसिएट प्रोफेसर, यू. जी. सी. पोस्ट डॉक्टरल फेलो, पी. एच.डी. एवं एम. फिल प्रतिभागी सम्मिलित हुए। ये प्रतिभागी केन्द्रीय विश्वविद्यालयों - दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, पाण्डुचेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान लखनऊ परिसर एवं आई.आई.टी., चेन्नई - तथा रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, लखनऊ विश्वविद्यालय आदि उच्च शिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

कार्यशाला में प्रातः नौ बजे से पांच बजे तक प्रतिदिन 06 व्याख्यान - कुल 60 व्याख्यानों के माध्यम से उमास्वाति कृत तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्यायों का अध्ययन कराया गया। साथ ही सात विशिष्ट व्याख्यान सायं भोजन के बाद 7.30 से रात्रि 8.30 बजे की अवधि में आयोजित किये गये।

कार्यशाला में निम्नलिखित विद्वानों द्वारा शिक्षण एवं विशिष्ट व्याख्यान प्रदान किया गया

सं.	नाम	शिक्षण संस्थान
1.	प्रो. जितेन्द्र बी. शाह	निदेशक, एल. डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद
2.	प्रो. गयाचरण त्रिपाठी	निदेशक, बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली
3.	प्रो. धर्मचन्द जैन	दर्शन विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
4.	प्रो. रमेश चन्द जैन	पूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर
5.	डॉ. वीरसागर जैन	अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली
6.	प्रो. अभय दोशी	अध्यक्ष, गुजराती विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई
7.	प्रो. केतन भाई शाह	अहमदाबाद
8.	प्रो. अशोक कुमार सिंह	बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली
9.	डॉ. प्रियादर्शना जैन	अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई
10.	प्रो. श्रीयांस सिंघई	अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर
11.	प्रो. ऋषभचन्द जैन	निदेशक, अहिंसा एवं प्राकृत शोध संस्थान, वैशाली, बिहार
12.	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	एसोसियेट प्रोफेसर, जैन दर्शन विभाग, लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली
13.	डॉ. सुमत कुमार जैन	वरिष्ठ अध्येता, प्राकृत, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर

देश के विभिन्न प्रान्तों से आये निम्नलिखित प्रतिभागियों इसमें भाग लिया -

सं.	नाम	शिक्षण संस्थान	विशेष सूचना
1.	डॉ. अर्चना रानी दबे	जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय	वरिष्ठ अध्येता, यू.जी.सी
2.	आलोक जैन	अम्बाला	एम.सी.ए.
3.	दीपिका दीक्षित	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर	शोध छात्रा
4.	एकता जैन	दिल्ली विश्वविद्यालय	शोध छात्रा
5.	हिमांशु देवेन्द्र जोशी	भुज (कच्छ), गुजरात	शोध छात्र
6.	कहकशां	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.	शोध छात्रा
7.	काजल शर्मा	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर	शोध छात्रा
8.	कश्मीरा केतन शाह	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	शोध छात्रा
9.	खुशबू जैन	दिल्ली विश्वविद्यालय	शोध छात्रा (जे.आर.एफ.)
10.	मनीष कौशिक	दिल्ली, दिल्ली सरकार	अध्यापक
11.	मेघा जैन	दिल्ली	शोध छात्रा
12.	नाजिमा खान	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.	शोध छात्रा

13.	डॉ. प्रद्युम्न शाह सिंह	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला	एसोसियेट प्रोफेसर
14.	प्रियंका दीक्षित	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.	शोध छात्रा
15.	प्रोमिला कुमारी जैन	लुधियाना, पंजाब	सेवानिवृत्त न्यायियक अधिकारी
16.	पुष्पा भोज	कुमाऊँ विवि. परिसर, अलमोडा	शोध छात्रा
17.	रिचा	दिल्ली विश्वविद्यालय	शोध छात्रा (जे.आर.एफ.)
18.	रीथिका चौराडिया एम.	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	शोध छात्रा
19.	डॉ. एस. भुवनेश्वरी	आई.आई.टी., चेन्नई	वरिष्ठ अध्येता, यू.जी.सी
20.	संगीता	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली	शोध छात्रा
21.	शिखा कुशवाहा	लखनऊ विश्वविद्यालय	शोध छात्रा
22.	शुभंकर बसक	पाण्डिचेरी केन्द्रीय विवि.	शोध छात्र (जे.आर.एफ.)
23.	डॉ. सुभाषचन्द्र जैन	यू. एस. ए.	शोध छात्र (जे.आर.एफ.)
24.	सुनीता जैन	अम्बाला	पूर्व प्राध्यापक
25.	सुनीती कौशल	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.	शोध छात्रा
26.	वेद कुमारी	दिल्ली विश्वविद्यालय	शोध छात्रा (जे.आर.एफ.)

इस राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 5 फरवरी को हुआ। इसमें दर्शन के प्रख्यात विद्वान प्रो. एस. आर. भट्ट, चेयरमैन, भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं उद्बोधन से आयोजन को गरिमा प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता प्रो. जितेन्द्र बी. शाह, निदेशक, एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद ने की।

कार्यक्रम का आरम्भ डॉ. मोहन पाण्डेय के णमोकार महामंत्र पाठ एवं सरस्वती वंदना से हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया। विजय वल्लभ स्मारक के सचिव श्री अशोक जैन ने स्मारक एवं संस्थान की गतिविधियों का परिचय दिया। कार्यशाला के आयोजन के सम्बन्ध में प्रो. अशोक कुमार सिंह ने प्रकाश डाला। संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. धनेश जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

समापन समारोह का का शुभारम्भ सुश्री अवनी जैन की सरस्वती वंदना से हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने इस कार्यशाला के महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं प्रतिभागियों से तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन की निरन्तरता बनाये रखने का आह्वान किया। प्रतिभागियों की ओर से डॉ. प्रद्युम्न शाह सिंह एवं खुशबू जैन ने कार्यशाला के सम्बन्ध में अपना प्रतिभाव दिया। समारोह के अध्यक्षता श्री आत्मवल्लभ जैन शिक्षण निधि के एमरिटस महासचिव श्री राजकुमार जैन जी द्वारा की गई। श्री राजकुमार जैन एवं प्रो. गचाचरण त्रिपाठी द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। समारोह का संचालन एवं कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण प्रो. अशोक कुमार सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, निदेशक, बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समारोह में समाज के गणमान्य जन उपस्थित थे।

***